

# पर्यावरण बोध संस्थान, चकराजपुरा

प्रधान कार्यालय-बोध भवन, चकराजपुरा गांव सहजनपुर पोस्ट भोपुर तहसील टोडाभीम जिला  
करौली(राजस्थान)322230

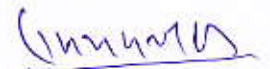
संध विधान पत्र

1. समिति का नाम :- इस समिति का नाम - "पर्यावरण बोध संस्थान, चकराजपुरा" गाँव सहजनपुर तहसील टोडाभीम जिला करौली राज्य राजस्थान है व रहेगा।
2. समिति का पंजीकृत कार्यालय तथा कार्यक्षेत्र इस समिति का पंजीकृत कार्यालय-बोध भवन, चकराजपुरा गाँव सहजनपुर पोस्ट भोपुर तहसील टोडाभीम जिला करौली (राजस्थान) है व रहेगा। तथा इसका कार्यक्षेत्र समस्त राजस्थान राज्य क्षेत्र तक सीमित होगा।
3. समिति के उद्देश्य इस समिति के निम्न लिखित उद्देश्य हैं:-
  1. पर्यावरण संरक्षण हेतु राजस्थान राज्य के ग्रामीण क्षेत्र में पक्की सडको, स्वीकृत रास्तों की अर्ध पक्की सडको के दोनों किनारों पर, राजस्व रिकार्ड में दर्ज देवस्थान भूमि, श्मशान भूमि पर, तालाबों व नहरों के किनारों पर वृक्ष लगाना, उन वृक्षों की संरक्षा हेतु सुरक्षा बाड़ हेतु कटीली झाड़िया, कटीले तार, लोहे की जाली, लोहे के टी गार्ड लगाना तथा ईटों की चिनाई द्वारा सुरक्षा घेरा बनाना तथा समय पर वृक्षों(पोधों) में पानी देना सम्मिलित है।
  2. राजस्थान राज्य के सार्वजनिक स्थानों पर, अस्पतालों, विद्यालयों, ग्राम पंचायत कार्यालय परिसरों में, सिंचायक एवं चारागाह भूमि पर जहाँ सम्बन्धित विभागों के सक्षम अधिकृत व्यक्तियों द्वारा उपलब्ध नियमानुसार स्वीकृति से वृक्षारोपण किया जाना, उनकी संरक्षा, संरक्षण करते हुये आवश्यक बाड़बन्दी किया जाना तथा आवश्यकतानुसार खाद पानी की व्यवस्था करना।
  3. पर्यावरण संरक्षण के लिये केन्द्र सरकार/राजस्थान राज्य सरकार स्तर पर पर्यावरण संबंधी चलाये जाने वाली योजनाओं में सहयोग एवं योगदान करना।
  4. निजी एवं सामाजिक संगठनों को पर्यावरण के विभिन्न कार्यों से जोड़ना। सामाजिक व धार्मिक स्थलों पर वृक्षारोपण हेतु उन्हें जागरूक एवं प्रोत्साहित करना एवं उन्हें इस कार्य में सहयोग करना।
  5. पर्यावरण संतुलन हेतु एवं संरक्षण हेतु प्रचार प्रसार करना। नुककड़ सभाए करना, रात्रि चौपाल करना, सामुदायिक सभाए करना, जन चेतना शिविर आयोजन करना, प्रशिक्षण सेमिनार कराकर सामुदायिक भागीदारी तय करना, विशेषज्ञों की राय लेना।
  6. वृक्षारोपण में नीम, पीपड़, बड़, खेजड़ी, सिरस, सैजना, पापड़ी, जामुन, अर्जुन छाल, शीशम, आम, करंज एवं शहतूत आदि जैसे बड़े वृक्षों के पेड़ लगाना ताकि कम पानी की आवश्यकता हो तथा जल्द वृद्धि करते



  
अध्यक्ष

  
सचिव

  
कोषाध्यक्ष

7. वृक्षों की वृद्धि स्थिति अनुसार वयस्क होने पर तीन वर्ष से पांच वर्ष के मध्य वृक्षों को सम्बन्धित विभागों को उनके स्वामित्व में दिया जाना शामिल है ।

8. पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन के अन्तर्गत पक्षियों विशेषतौर पर छोटी चिड़िया "गौरया" जो लुप्त होने के कगार पर है, के संरक्षण तथा वंश वृद्धि हेतु मिट्टी के पक्के धोंसले व लकड़ी के धोंसले, ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीण सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित करते हुये ग्रामीणों के घरों, आंगनों, पेड़ों एवं आवश्यक उचित स्थानों पर लगाना ।

9. पर्यावरण संरक्षण के तहत पक्षियों को बचाने के लिये उनको पीने के लिये पानी उपलब्ध कराने हेतु ग्रामों में निश्चित स्थानों पर ग्रामीण समुदाय को मिट्टी के परिंडा उपलब्ध कराना एवं उनमें प्रतिदिन पानी भरने की व्यवस्था करना तथा पक्षी विशेषज्ञों की राय लेकर जन चेतना जागृत करना ।

10. वृक्षारोपण एवं उनके संरक्षण, पक्षियों के संरक्षण, सफाई रखने, बिजली पानी बचाने एवं प्लास्टिक का उपयोग बन्द कराने के लिये, वृक्ष कटाई बन्द कराने के लिये समय समय पर ग्रामीण समुदाय को जन चेतना शिविर द्वारा, सभाओं द्वारा, नुक्कड़ सभाएं तथा रात्रि चौपाल कर समझाइश करना एवं दुरुपयोगों से रोकने का प्रयास करना ।

11. पर्यावरण संरक्षण के अन्तर्गत बिजली (विधुत) बचाने के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में दिन में भी बिना उपयोग के भी बिजली बल्बों को जलते ही छोड़ देने से रोकने हेतु समझाइश करना, आवश्यकतानुसार उनके लिये बल्ब बन्द करने के लिये चटकनी लगवाना एवं चटकनी उपलब्ध कराना ।

12. वित्तीय स्थिति को मददेनजर रखते हुये वृक्ष पौधशाला तैयार करने, टी गार्ड तैयार करना, धोंसले व परिंडा निर्माण कार्य सम्मिलित किया जा सकेगा ताकि ससाधनों की पूर्ति कम लागत में तैयार की जा सके ।

13. मानव सेवा के अन्तर्गत समय समय पर होने वाली मौसमी बीमारियों से बचाव हेतु ऐतियात बरतने के लिये जन चेतना शिविर आयोजित करना, समय समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कैंम्प आयोजित कराना, आँखों की जांच हेतु कैंम्प आयोजित करना तथा रक्तदान शिविर आयोजित कराना व समुदाय को प्रोत्साहित करना ।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति में कोई लाभ निहित नहीं है ।

  
अध्यक्ष

  
सचिव

  
कोषाध्यक्ष